आपने लिखा

सौभाग्य, दुर्ग में पिटारा खुल गया है। दुर्ग से 200 कि.मी. दूर होते हुए भी मुझे इस बात की खुशी है कि 'एकलव्य' अब हमारे और पास आ गया है। अनमोल सामग्रियों का सुलभ भण्डार अब हमारी पहुँच में है। 'पिटारा' इस अंचल को आपका एक उपहार, एक अच्छा दोस्ताना है। श्री नन्दकुमार (शिक्षा सचिव, छ.ग.) जैसे विद्वानों की नज़रें अब तक वहाँ पड़ चुकी होंगी। छत्तीसगढ़ के शिक्षकों और सरकारी स्कूलों के लिए यह सौभाग्य कारक होगा।

रोशन कुमार वर्मा, प्राचार्य
कांकेर, छत्तीसगढ़

संदर्भ पत्रिका पूरी व बार-बार पढ़ी जाए तो बहुत कुछ सीखा व समझा जा सकता है। वैसे तो मैं नौकरी करता हूँ किन्तु मैं कुछ विषय मसलन गणित, विज्ञान, अँग्रेज़ी वगैरह पढ़ाने की इच्छा भी रखता हूँ।

प्राचीन काल की शिक्षा व सभ्यता के गढ़ आज स्तरहीन शिक्षा, परीक्षा में नकल आदि के अड्डे व खड्डे बन गए हैं। इसलिए एकलव्य जैसे सुधी संगठन अथक प्रयत्न के बाद भी उतनी कामयाबी हासिल नहीं कर पा रहे हैं।

होरीलाल कनोजिया
नासिक, महाराष्ट्र

कृपया ध्यान दीजिए

* संदर्भ का अंक प्राप्त न होने पर।
* संदर्भ की सदस्यता शुल्क भेजने हेतु।
* पते में परिवर्तन की सूचना हेतु।

सम्पर्क कीजिए:

संदर्भ, वितरण विभाग

एकलव्य

ई-10, बी.डी.ए. कॉलोनी, शंकर नगर, शिवाजी नगर
भोपाल, म.प्र. 462016
फोनः 0755 - 2671017, 2550976
ई-मेलः circulation@eklavya.in